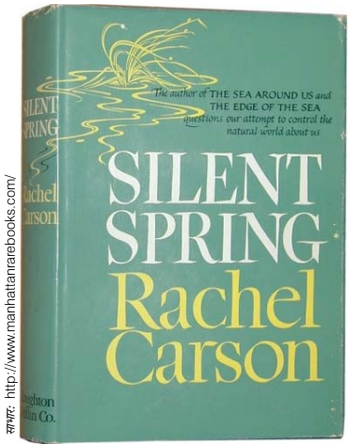

साभार: http://www.manhattanrarebooks.com/

राशेल कार्सन

किताब से दिखाई राह

फिलिस मैकिन्टॉश

संकोची, विनम्र वैज्ञानिक और पूर्व सरकारी अधिकारी राशेल कार्सन के बारे में किसी ने कभी नहीं सोचा था कि वह अमेरिका की सबसे प्रभावशाली स्त्रियों में से एक होंगी। लेकिन 1962 में प्रकाशित हुई उनकी पुस्तक *सायलेंट स्प्रिंग* ने अमेरिकी जनमानस को पर्यावरण के प्रति जागरूक करने के साथ-साथ प्रकृति को रासायनिक विनाश से बचाने के एक अभूतपूर्व राष्ट्रीय प्रयास को प्रेरित किया।

प्रशिक्षित वैज्ञानिक के बतौर सुश्री कार्सन ने कीटनाशकों के दीर्घकालीन खतरों के बारे में अपने नतीजों को सिलसिलेवार दर्ज़ किया। एक लेखक के बतौर उन्होंने इन नतीजों को पाठकों के सामने इस तरह से रखा कि औसत पाठक भी उन्हें समझ सकें।

100 साल पहले पश्चिमी पेन्सिल्वैनिया के एक छोटे कस्बे में जन्मी राशेल कार्सन को बचपन से ही समुद्र और उससे संबद्ध सभी चीजें बहुत आकर्षित करती थीं। उनके मन में लेखक बनने का सपना भी था।

जिन दिनों विरली स्त्रियां ही विज्ञान पढ़ती थीं तब पेन्सिल्वानिया कॉलेज फॉर विमेन में अंग्रेजी की छात्रा सुश्री कार्सन ने दूसरे ही साल जीवविज्ञान को अपना विषय बना लिया। 1932 में उन्होंने विशेष सम्मान सहित जॉन्स हॉपकिन्स विश्वविद्यालय से समुद्र जीवविज्ञान में स्नातकोत्तर उपाधि पाई। यूनिवर्सिटी ऑफ़ मैरीलैंड में जीवविज्ञान पढ़ाते हुए वह गर्मियों में मैसाच्युसेट्स की वुड्स होल मॅरीन बायॅलॉजिकल लैबोरेटरी में अध्ययन करतीं। यहीं उन्होंने पहली बार समुद्र देखा।

सरकारी नौकरी की शुरूआत में वह यू.एस. ब्यूरो ऑफ़ फिशरीज़ के लिए विज्ञान से जुड़े विषयों पर रेडियो आलेख लिखती थीं। 1936 में उन्हें जल जीवविज्ञानी की नौकरी की पेशकश की गई और वह एजेंसी के इतिहास में दूसरी स्त्री वैज्ञानिक बनीं। संघीय सरकार की 15 साल की नौकरी के दौरान उन्होंने संरक्षण और प्राकृतिक संसाधनों के बारे में शैक्षणिक सामग्री लिखी और वैज्ञानिक लेखों का संपादन किया। 1952 में सेवानिवृत होने तक वह यू.एस. ब्यूरो ऑफ़ फिशरीज के प्रकाशनों की मुख्य संपादक बन चुकी थीं।

सरकारी नौकरी करते हुए भी सुश्री कार्सन समुद्र के बारे में स्वतंत्र लेखन करती रहीं। 1941 में प्रकाशित उनकी पहली पुस्तक *अंडर द सी विंड* समुद्र और उसके तटों पर जीवन के लिए संघर्ष को एक प्रकृतिविद की दृष्टि से देखा गया था। पृथ्वी और महासागरों को रचने वाली प्रक्रियाओं के बारे में लिखी गई उनकी दूसरी पुस्तक *द सी अराउंड अस* ने उन्हें विश्वव्यापी प्रशंसा दिलवाई और बिक्री के रिकॉर्ड कायम किए। अपनी पुस्तकों की वित्तीय सफलता के बूते उन्होंने नौकरी छोड़कर मेन के सागरतट पर एक मकान बनवा लिया। समुद्र के प्रति उनका आकर्षण बरकरार रहा। 1955 में प्रकाशित उनकी तीसरी पुस्तक *द एज ऑफ द सी* समुद्री जीवों और वनस्पतियों का लेखाजोखा थी।

सुश्री कार्सन का अधिकांश लेखन भले ही समुद्र पर केंद्रित रहा लेकिन रासायनिक कीटनाशकों के अतिशय प्रयोग से हो रही पर्यावरण की हानि उन्हें बहुत चिंतित करती थी। 1945 में उन्होंने कीटनाशकों के परीक्षण के बारे में एक लेख लिखा जो *रीडर्स डायजेस्ट* पत्रिका ने अस्वीकार कर दिया। 1958 में जब डीडीटी और अन्य रासायनिक कीटनाशकों के दुष्प्रभाव अपेक्षाकृत स्पष्ट दिखने लगे थे तो रशेल को मैसाच्यूसेट्स के केप कॉड क्षेत्र में रहने वाले उनके मित्रों ने पत्र लिखकर बताया कि हवा से डीडीटी के छिड़काव के कारण उनकी जमीन पर बहुत से पक्षी मर गए हैं।

इस घटना से विचलित सुश्री कार्सन ने फिर से रासायनिक कीटनाशकों के दुष्प्रभाव पर एक लेख लिखा जिसे किसी ने नहीं छापा। फिर वह गहन शोध करके एक पुस्तक लिखने में जुट गईं। वह जानती थीं कि इसे रसायन उत्पादकों की कड़ी आलोचना झेलनी पड़ेगी, इसलिए उन्होंने एक-एक स्रोत को दर्ज़ किया और पांडुलिपि की समीक्षा करने वाले विशेषज्ञों की विशद सूची बनाई।

1962 की गर्मियों में न्यू यॉर्कर पत्रिका में *सायलेंट स्प्रिंग* की पहली किश्त छपते ही रसायन उद्योग ने उन्हें ''बेतुका हो-हल्ला मचानेवाली स्त्री'' घोषित करने की मुहिम छेड़ दी। लेकिन पाठकों ने पुस्तक को हाथोंहाथ लिया। एक प्रमुख टेलिविज़न नेटवर्क ने कीटनाशकों के बारे में एक विशेष कार्यक्रम प्रसारित किया जिसमें शांत-संयत राशेल कार्सन का साक्षात्कार भी दिखाया गया। टेलिविज़न कार्यक्रमों में दिखने और साक्षात्कार देने के अलावा सुश्री कार्सन ने कई संसदीय समितियों के समक्ष गवाही दी और ''कीटनाशक आयोग'' या किसी ऐसी एजेंसी की स्थापना की मांग की जो लोगों और पर्यावरण को रासायनिक खतरों से सुरक्षित रखने का काम करे।

सायलेंट स्प्रिंग से प्रेरित हुए पर्यावरण आंदोलन के फलस्वरूप 1970 में अमेरिकी संसद ने एन्वायरमेंट प्रॉटेक्शन एजेंसी का सृजन किया। 1972 में सरकार ने कीटनाशक डीडीटी को प्रतिबंधित कर दिया जो अमेरिका के राष्ट्रीय प्रतीक बाल्ड ईगल और कई अन्य पक्षियों को विलुप्ति के कगार पर पहुंचा रहा था।

एक ओर सुश्री कार्सन *सायलेंट स्प्रिंग* के माध्यम से पर्यावरण की हानि के बारे में जानकारी देती हुईं कीटनाशक उत्पादकों के तीखे हमले झेल रही थीं और दूसरी ओर छाती का कैंसर उन्हें खोखला कर रहा था। अप्रैल 1964 में जब 56 वर्ष की आयु में अपने घर पर उनकी मृत्यु हुई तो उनके लेखन के कारण अस्तित्व में आए विधेयक भविष्य के गर्भ में थे जो पर्यावरण संरक्षण में मील का पत्थर साबित हुए।

1962 में उन्होंने एक मित्र को लिखा था, ''अब मैं मान सकती हूं कि मैं कम से कम कुछ मदद कर पाई हूं। अब यह मानना तो एकदम ही अवास्तविकतापूर्ण होगा कि एक किताब चीज़ों को पूरी तरह बदल सकती है।'' प्रखर दृष्टि से संपन्न सुश्री कार्सन इस मामले में गलत साबित हुईं। उनकी जीवनीकार लिंडा लीयर ने लिखा, ''व्यक्तिगत आक्रमणों को झेलते हुए, गंभीर रोग से जूझती राशेल कार्सन ने परिवर्तन ला सकने में एक व्यक्ति के सामर्थ्य का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया।''

© ए.पी.-डब्ल्यू.डब्ल्यू.पी.

राशेल कार्सन की पुस्तक *साइलेंट स्प्रिंग* कोलकाता और चेन्नई के अमेरिकी पुस्तकालयों में उपलब्ध है।

फिलिस मैकिन्टॉश नेशनल वाइल्डलाइफ पत्रिका की पूर्व कंट्रिब्यूटिंग एडिटर हैं और अक्सर स्वास्थ्य सम्बन्धी मुद्दों पर लिखती हैं।